कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट – 5

11 मई 2020 तक की स्थिति

राहत COVID: समाज के वंचित और कमजोर वर्ग को नजरअंदाज ना करना

हालांकि COVID 19 लॉकडाउन ने इस अभूतपूर्व समय के दौरान किसी को भी नहीं बख्शा है, लेकिन इसका सबसे अधिक प्रभाव समाज के अत्यंत उपेक्षित वर्गों पर पड़ा है। ऐसे समय में बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच ना होने के कारण, उन्हें समझने की और उनका साथ देने की अधिक आवश्यकता है।

झारखंड में साबर जनजाति के यह दंपति इस कठिन समय में भी मुफ्त में वस्तुएं लेने के लिए तैयार नहीं थे। इसके बदले में उन्होंने, स्थिति सामान्य होने पर गूंज की प्राथमिक पहल 'क्लॉथ फॉर वर्क' के अंतर्गत काम करने की प्रतिबद्धता जाहिर की, और उसके बाद गरिमा के साथ सामग्री को स्वीकार किया।

कार्यक्षेत्र की मुख्य गतिविधियां:

- हमने संपूर्ण देश के अपने नेटवर्क को सक्रिय किया है और हमारी क्षेत्रीय टीमों के अलावा **200 सहभागी संस्थाओं के साथ 23 राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों** में काम शुरू हो गया है।
- **8,00,000 किलो से अधिक राशन** तथा अन्य जरूरी सामग्री पहुंचाई जा चुकी है।
- स्थानीय सामुदायिक रसोईयों तक राशन पहुँचाया गया जिससे **1,43,000 लोगो के भोजन** का इंतज़ाम किया गया।·
- स्वास्थ्य रक्षा संबंधित पहल: **1,52,000 फेस मास्क तथा 55000 से अधिक सैनिटरी पैड** बनाए गए।
- **1,13,000 लोगों तक तैयार भोजन** पहुंचाया गया।

शहरों में प्रवासियों के लिए हमारा काम निरंतर जारी है....

गूंज द्वारा **बंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली एनसीआर, हैदराबाद, कोलकाता तथा मुंबई** में राहत कार्य जोरों पर जारी है। राहत कार्य के अंतर्गत राशन किट प्रदान करना हो या सामुदायिक रसोइयों के लिए सहयोग करना हो; या फंसे हुए प्रवासी मजदूरों के उपेक्षित वर्गों के लिए भोजन की पहुंच को सुनिश्चित करना हो... हम उनके साथ हैं।

इन शहरों में हमने **25,000 परिवारों** तक अपनी पहुंच बनाई है। **97,000 लोगो तक तैयार भोजन** पहुँचाया गया है तथा अब तक **3,45,000 किलो राशन** पहुँचाया जा चुका है।

कुछ उपेक्षित समुदाय जिनके साथ हम खड़े हैं ...

स्थानीय समुदाय जो एक दशक बाद भी प्रवासी है

गूंज की टीम बंगाल के अलीपुरद्वार जिले में टोट समुदाय के पिछड़े हुए, निशक्तजन, प्रवासी मजदूर तथा भूमिहीन परिवारों के साथ खड़ी है। यह लोग मूल रूप से असम से हैं जिनके पास खेत और संसाधन सब मौजूद था लेकिन जातीय अशांति के परिणामस्वरूप उन्हें अपने मूल स्थान से पलायन करना पड़ा। आज एक दशक बाद भी यहां के परिवार मतदाता पहचान पत्र या राशन कार्ड ना होने के कारण, सरकारी सुविधाओं से वंचित हैं। और फिर लॉक डाउन के समय में पैसे ना होने और भोजन तक पहुंच ना होने के कारण उन्हें संघर्ष का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे समय में गूंज ने उनका साथ दिया। हम संपूर्ण भारत में स्थानीय समुदायों के साथ उनकी स्थिरता और आजीविका के लिए कार्य कर रहे हैं।

रेड लाइट एरिया में रह रही महिलाओं तथा बच्चो का बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष

गूँज दो संगठनों के साथ रेड लाइट एरिया में महिलाओ तथा बच्चो के लिए काम कर रहा है। मुंबई के सबसे बड़े रेड लाइट एरिया में से एक कमाठीपुरा और फ़ॉकलैंड रोड की महिलाओ तथा बच्चो को सहायता प्रदान की जा रही है। लॉक डाउन ने यहां रहने वाले लोगों के जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। आय का कोई स्रोत ना होने के कारण महिलाओं तथा बच्चों की स्थिति सामान्य से भी बदतर है। ऐसी ही स्तिथि भिवंडी रेड लाइट एरिया में भी है जो ठाणे जिले के अंतर्गत आता है। हम संपूर्ण भारत में अन्य सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर उन्हें सहायता तथा समर्थन प्रदान कर रहे है।

अकेलेपन और निराशा से जूझते विशिष्ट रूप से समर्थ बच्चे तथा मानसिक रूप से प्रभावित लोग

गार्डन रीच इंस्टिट्यूट फॉर रीहेबलीटेशन एण्ड रिसर्च, कोलकाता की देख-रेख में विशिष्ट रूप से समर्थ बच्चे रहते है जिनके माता-पीता दिहाड़ी मजदूरी का काम करते है। लॉकडाउन के कारण इनके पास ना काम है ना पैसा है और इस कारण भूख एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आने लगी थी। गूँज ने पहल की और उनका सहयोग करने के लिए राशन उपलब्ध करवाया। इसी प्रकार, सरबरी होम - एक ऐसी संस्था जो मनोसामाजिक रूप से प्रभावित बेघर व्यक्तियों को मानसिक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करती है - यहां आश्रय गृह के लिए गूँज द्वारा खाद्य

सामग्री की व्यवस्था की गई, जिससे भोजन की कमी को पूरा किया गया। हम उनकी अन्य आवश्यक जरूरतों को पूरा करने के लिए भी उनके साथ खड़े है।

अन्य वर्ग जिन तक हम पहुंचे:

• असम में चाय बागानों में काम करने वाला श्रमिक वर्ग
• दिल्ली, कोलकाता तथा मुंबई के सेक्स वर्कर
• मुंबई के फेरी वाले निशक्तजन
• समूचे भारत की स्थानीय जनजातियाँ
• मिज़ोरम के एच.आई.वी.+ लोग
• कुष्ठ रोगी तथा उनके परिवार

कार्य क्षेत्र से जानकारी:

प्रभावित लोगो तक पहुँची तत्काल राहत सहायता:

57,600 परिवारो तक पहुंच।

1,13,000 तैयार भोजन लोगों तक पहुंचाया गया।

8,00,000 किलो राशन तथा अन्य आवश्यक सामग्री, राशन किट तथा सामुदायिक रसोईंयों के माध्यम से पहुँचाई गयी।

स्थानीय सामुदायिक रसोई की शुरुआत एवं सहयोग

17 सामुदायिक रसोइयों को **1,43,000 भोजन** के लिए **43,000 किलो** राशन के माध्यम से सहयोग।

स्वास्थ्य रक्षा संबंधित पहल

1,52,000 फेस मास्क तथा **55,000 सेनेटरी पैड** तैयार किए गए।

अभावों को भरने का प्रयास तथा नेटवर्क की पहुंच बढ़ाना

23 राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशो में **200 सहभागी संस्थाओं** के साथ कार्यो की शुरुआत।

उद्योग जगत, संगठनों तथा व्यक्तियों के साथ **व्यापक स्तर पर काम**।

राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश जहां वर्तमान में गूंज कार्यरत है:

आंध्रप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, झारखण्ड, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मिज़ोरम, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, पश्चिम बंगाल।

पिछली रिपोर्ट:

- 10 अप्रैल - COVID 19 : प्रवासी श्रमिकों का विस्थापन
- 17 अप्रैल – COVID 19 : भूख और विस्थापन की आपदा
- 27 अप्रैल - राहत COVID 19 : भूला दिए गए ग्रामीण भारत को सहेजने की कोशिश
- 4 मई - राहत COVID19 : ग्रामीण भारत तक पहुँच

रिपोर्ट पढ़ने के लिए क्लिक करें-https://bit.ly/2K1JH3e

शब्दों का मोल: मीडिया में गूंज की उपस्थिति

द गार्डियन- https://bit.ly/2WNsobU

मनी कंट्रोल- https://bit.ly/2YQL7WK

रूरल मार्केटिंग- https://bit.ly/3boVPX6

हमारा सहयोग कीजिए:

- **तत्काल आवश्यकता**

  थोक रूप में सामग्री सहयोग - https://bit.ly/2yRoooh

  राशि सहयोग - https://bit.ly/3b52CpJ

- गूँज संस्थापक अंशु गुप्ता द्वारा किए गए वेबीनार देखने के लिए - कैटेलिस्ट 2030- https://bit.ly/2YQuqe3
  एडवांटेज डायलॉग | ओपिनियन दैट मैटर्स- https://bit.ly/2LkNdGG
- गूँज के लिये सहयोग राशि जुटाने के लिये आप फंडरेजिंग कैंपेन शुरू कर सकते है और अपने नेटवर्क में प्रेषित कर सकते हैं।
- अधिक जानकारी के लिएए हमे mail@goonj.org पर लिखें।